सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान -मैं रूद्र ज्ञान यज्ञ का सच्चा सेवाधारी हूँ। ''सेवाधारी सेवा करने से स्वयं भी शक्तिशाली बनते हैं और दूसरों में भी शक्ति भरने के निमित्त बनते हैं। सच्ची रूहानी सेवा सदा स्व उन्नति और औरों की उन्नति के निमित्त बनाती है। दूसरे की सेवा करने से पहले अपनी सेवा करनी होती। सेवा से डबल फायदा होता है अपने को भी और दूसरों को भी। सेवा में बिजी रहना अर्थात सहज मायाजीत बनना। सेवाधारी बनना अर्थात सहज विजयी बनना। सेवाधारी माला में सहज आ सकते हैं। क्योंकि सहज विजयी हैं। तो विजयी विजय माला में आयेंगे। सेवाधारी का अर्थ है ताजा मेवा खाने वाले। ताजा फल खाने वाले बहुत हेल्दी होंगे। कितना भी कोई उलझन में हो -सेवा खुशी में नचाने वाली है। कितना भी कोई बीमार हो सेवा तन्दरूस्त करने वाली है। सभी सेवाधारी अर्थात सदा सेवा के निमित्त बनी हुई आत्माएं। सदा अपने को निमित्त समझ सेवा में आगे बढ़ते रहो। मैं सेवाधारी हूँ, यह मैं-पन तो नहीं आता है ना। बाप करावनहार है, मैं निमित्त हूँ। कराने वाला करा रहा है। चलाने वाला चला रहा है - इस श्रेष्ठ भावना से सदा न्यारे और प्यारे रहेंगे। अगर यह भान आया कि मैं करने वाला हूँ तो न्यारे और प्यारे नहीं। तो सदा न्यारे और सदा प्यारे बनने का सहज साधन है करावनहार करा रहा है, इस स्मृति में रहना। इससे सफलता भी ज्यादा और सेवा भी सहज। मेहनत नहीं लगती। कभी मैं-पन के चक्र में नहीं आते।

योगाभ्यास - अमृतवेले आँख खुलते ही स्वयं को परमधाम में महाज्योति के सम्मुख अनुभव करें ....शिव बाबा शक्तियों से सुसज्जित कर रहे हैं...वहाँ से उतरकर फरिश्तों की दुनिया में आ जाएं ...सूक्ष्म वतन फरिश्तों की दुनिया वहाँ सम्पूर्ण ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा कम्बाइण्ड मुझे शक्तियों व गुणों से चार्ज कर रहे हैं...उसके पश्चात स्वयं को सशक्त कर साकार लोक में अवतरित ईश्वरीय सेवाधारी के रूप में अपना सर्वश्रेष्ठ पार्ट बजाने के लिए तैयार हो जाएं...।

मनन-चिन्तन - सच्चे सेवाधारी की निशानियां व गुण क्या होंगे? सच्चा सेवाधारी को किन धारणाओं पर अधिक ध्यान रखना चाहिए?

तीव्र पुरूषार्थियों के प्रति - ब्रह्मा बाबा ने अंत तक स्वयं को सेवाधारी समझा...हमेशा निमित्त, निर्माण, निरहंकारी का स्वरुप प्रत्यक्ष किया। उन्होने कभी स्वयं को इंचार्ज या मालिक नहीं समझा...सदा शिव बाबा को ही करावनहार व स्वयं को करनहार समझा..।

द्वितीय सप्ताह

स्वमान - मैं दिव्य बुद्धि के वरदान से सम्पन्न आत्मा हूँ।''बापदादा हर ब्राह्मण बच्चे को जन्म लेते ही विशेष दिव्य जन्मदिन की दिव्य सौगात 'दिव्य बुद्धि' देते हैं। दिव्य बुद्धि ही हर बच्चे को दिव्य ज्ञान, दिव्य याद, दिव्य धारणा स्वरुप बनाती है। दिव्य बुद्धि ही धारणा करने की विशेष गिफ्ट है। दिव्य बुद्धि में अर्थात सतोप्रधान गोल्डन बुद्धि में जरा भी रजो तमो का प्रभाव पड़ता है तो धारणा स्वरुप के बजाए माया के प्रभाव में आ जाते हैं। सहज गिफ्ट के रुप में प्राप्त हुई दिव्य बुद्धि कमजोर होने के कारण मेहनत अनुभव करते हैं। जब भी मुश्किल वा मेहनत का अनुभव करते हो तो अवश्य दिव्य बुद्धि किसी माया के रूप से प्रभावित है तब ऐसा अनुभव होता है। दिव्य बुद्धि सेकण्ड में बापदादा की श्रीमत धारण कर सदा समर्थ, सदा अचल, सदा मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति का अनुभव करते हैं। श्रीमत अर्थात श्रेष्ठ बनाने वाली मत। वह कभी मुश्किल अनुभव नहीं कर सकते। श्रीमत सदा सहज उड़ाने वाली मत है लेकिन धारण करने की दिव्य बुद्धि जरूर चाहिए। तो चेक करो -अपने जन्म की सौगात सदा साथ है?

सावधानी - ईश्वरीय दिव्य बुद्धि की गिफ्ट सदा छत्रछाया है लेकिन अगर माया अपनी छाया डाल देती है तो छत्र उड़ जाता है केवल छाया रह जाती है।

योगाभ्यास - दिव्य बुद्धि एक अलौकिक विमान है जिससे परमधाम व सूक्ष्म वतन की सैर सहज की जा सकती है...विशेष अमृतवेले एवं नुमा शाम के योग में दिव्य बुद्धि की गिफ्ट को चेक करें कि वह साथ है...दिन भर आत्म-चिन्तन कर चेक करें कि उस पर माया का प्रभाव तो नहीं पड़ रहा है...

मनन-चिन्तन - वरदानों को साकार रूप में लाने के लिए क्या करें? दिव्य बुद्धि द्वारा क्या-क्या महान कार्य किए जा सकते हैं?

तीव्र पुरूषार्थियों के प्रति - दिव्य बुद्धि पुरूषार्थी जीवन में सफलता प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है। बुद्धि की दिव्यता जितनी ज्यादा उतना ही बापदादा व ब्राह्मण परिवार के स्नेह के पात्र बन सकते हैं। अत: ध्यान रखें कि कहीं इस गिफ्ट पर माया का प्रभाव न पड़े।

तपस्या में.... पृष्ठ 5 का शेष

बिगड़ते हैं व वातावरण भी, स्वयं की भी स्थिति बिगड़ती है और दूसरों की भी, पारस्परिक अशांति व वैर भी बढ़ते हैं। वास्तव में दुर्भावनाएं रखना अर्थात् दु:खों के बीज बोना। इसलिए तपस्वी को चाहिए कि अब दुर्भावनाओं को ज्ञान-अग्नि से भस्म करके सभी को शुभ-भावनाओं का बल प्रदान करें क्योंकि मन में किसी के लिए भी दुर्भावना पैदा होते ही तपस्या भंग हो जाती है, चित्त अग्नि में जलने लगता है और मन अनेक विकृतियों से भर जाता है। अत: जबकि शुभ-भावना रखने में तो हमारा कुछ भी खर्च नहीं होता तो क्यों न इस महानता से स्वयं को सजाकर तपस्वी बनें।

कर्म संन्यास से तपस्या असफल - कई पुरुषार्थी कर्म को तपस्या में बाधक महसूस करते हुए कर्म का संन्यास कर देना चाहते हैं परंतु वास्तव में कर्म व ईश्वरीय सेवा तपस्या में बलदायक है। और कर्म संन्यास ईश्वरीय आज्ञा भी नहीं है। यदि कर्म तपस्या में बाधक लगता है तो इसका कारण कर्म नहीं, कर्मों में कर्त्तापन का व आसक्ति का भाव है। अनेकों का अनुभव है कि कर्म त्याग करने पर धीरे-धीरे कई विकार तन-मन में सुस्ती लाने लगते हैं। कर्म संन्यास से बौद्धिक विकास भी रूक जाता है और यह अकाट्य सत्य है कि कर्मयोग के बिना कर्मातीत स्थिति को नहीं पाया जा सकता। हाँ कर्मों को हल्का

वर्धा। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पुष्पा ताई, उषाताई, ब्र.कु.डॉ.प्रभा मिश्रा, क्षेत्रीए संचालिका ब्र.कु.पुष्पारानी तथा अन्य।

कानपुर। 'एक शाम प्रभु के नाम' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक सुखदेवी वर्मा, ब्लाक प्रमुख हरीओम, ब्र.कु.अशोक गावा, ब्र.कु.विद्या, ब्र.कु.अनीता एवं ब्र.कु.अविनाश।

रांची। तम्बाकू मुक्ति कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्रजभूषण सिंह, समाज सेवी सिद्धेश्वर सिंह तथा ब्र.कु.निर्मला।

रीवा। सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सहायक संचालिका ट्रेजरी बासंती आन्या एवं मंचासीन हैं महापौर शिवेन्द्र सिंह एवं ब्र.कु.निर्मला।

मुरा-कच्छ। ओरियंटल कार्बन एण्ड केमिकल लि. में 'तनाव प्रबंधन एवं सकारात्मक चिंतन' विषय पर प्रशिक्षण देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं टी.के.सिन्हा, अलोक गुप्ता, ब्र.कु.सुशीला तथा अन्य।

मऊ। नवनियुक्त आई.ए.एस. मिथिलेश कुमार मिश्रा से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.विमला।